धींधवाल पब्लिकेशन

DHP-62

Dhindhwal Publication

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

2nd ग्रेड (द्वितीय श्रेणी अध्यापक)

दर्शनशास्त्र

Philosophy

सामाजिक विज्ञान (S.St.)

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित

20 दिसम्बर 2024 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार

:: मार्गदर्शकगण ::

होशियार सिंह
(उप निरीक्षक राज. पुलिस)

डॉ. मंगल यादव
(Assistant Professor चयनित)

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

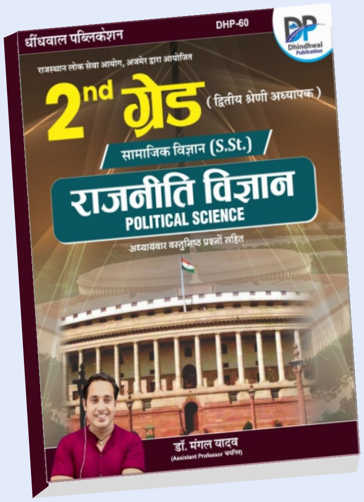

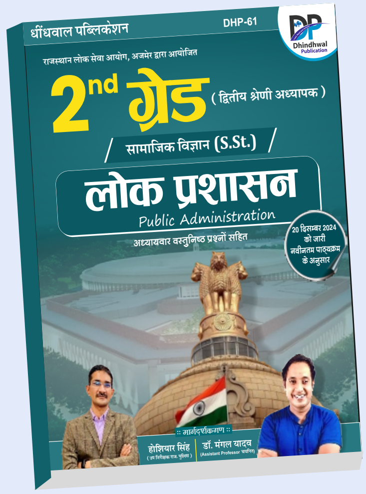

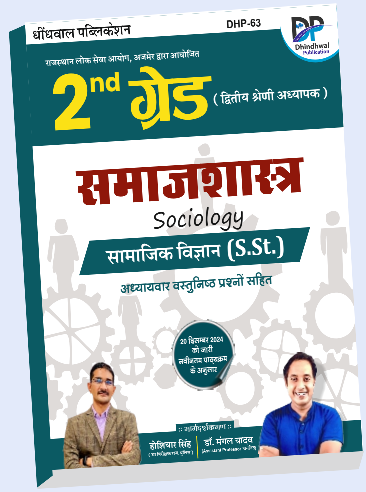

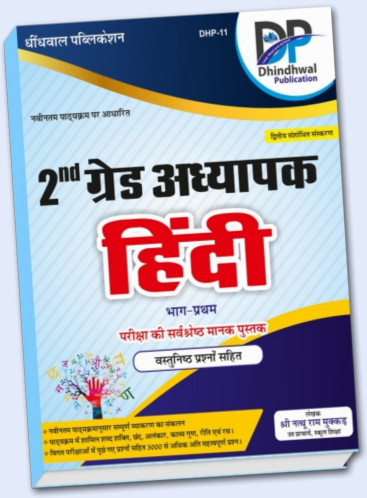

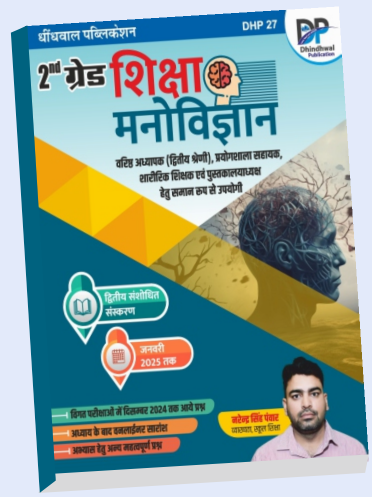

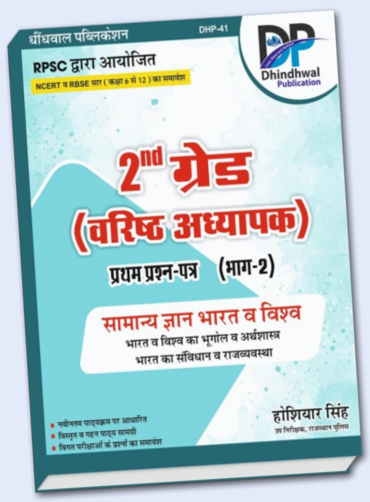

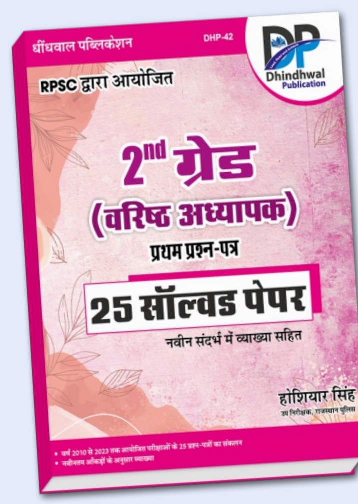

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

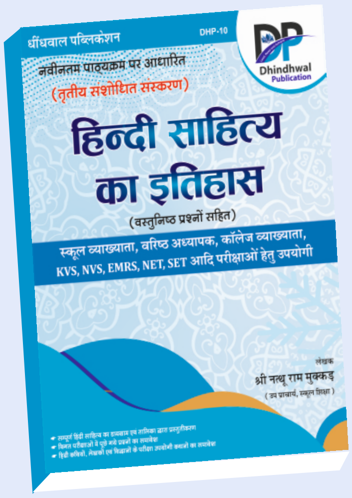

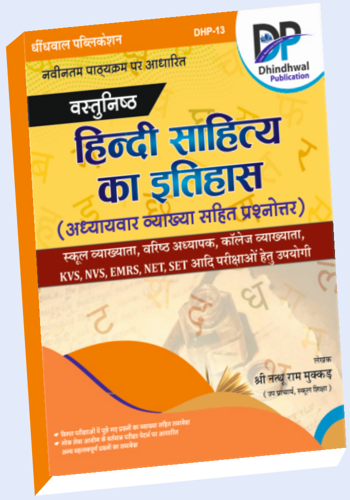

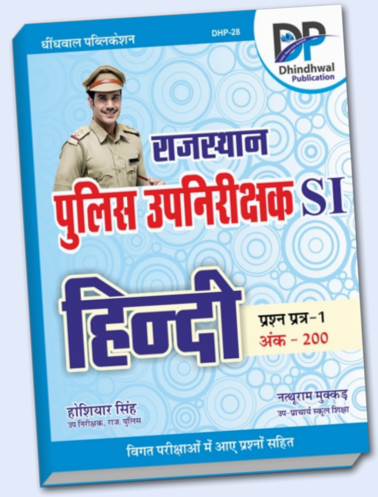

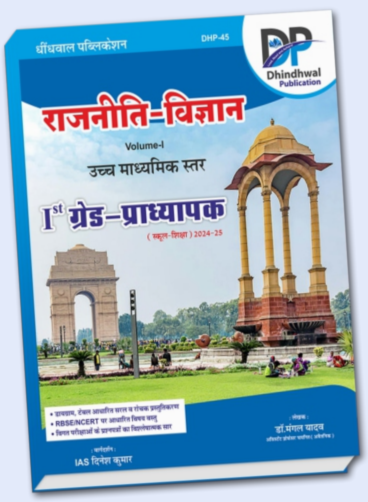

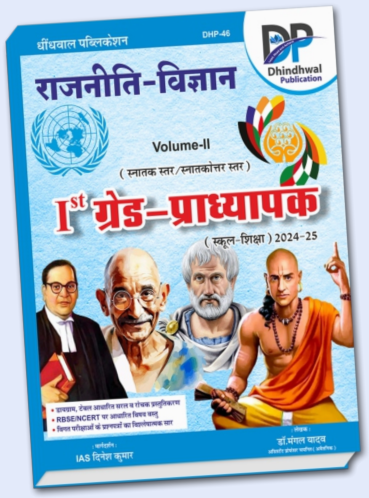

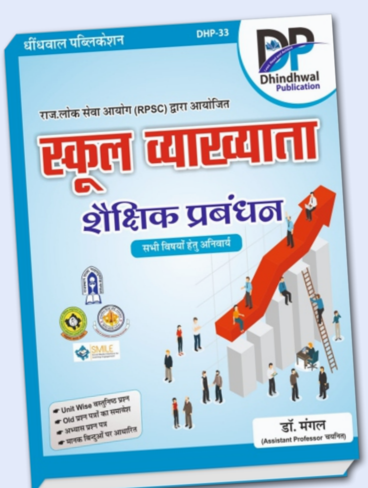

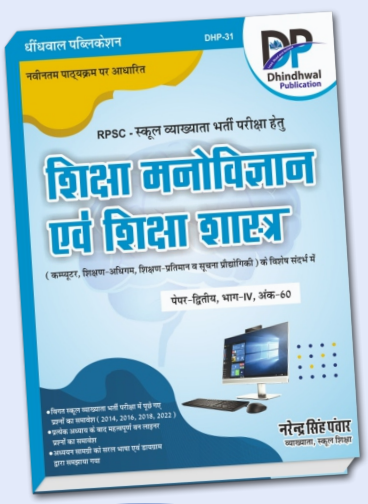

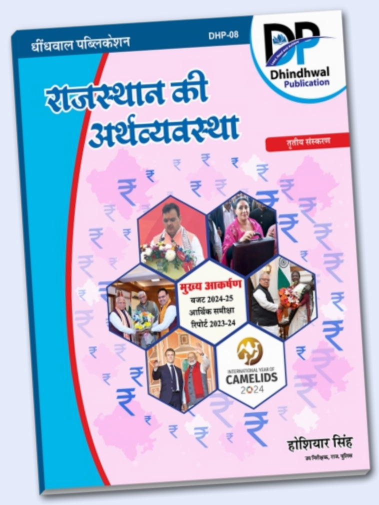

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

:: मार्गदर्शकगण ::

होशियार सिंह

होशियार सिंह का जन्म ग्राम रतनपुरा तहसील राजगढ़ जिला चुरू (राजस्थान) में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही वर्ष 2003 से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आरम्भ की, राजस्थान पुलिस (जिला बीकानेर वर्ष 2008) में कानिस्टेबल के पद पर चयन के साथ ही 2008 में तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद पर चयन हुआ। आपने 5 वर्ष तक जिला राजसमंद में तृतीय श्रेणी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् द्वितीय श्रेणी शिक्षक (हिन्दी) 2013 में चयन होने पर आपने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कतरियासर (बीकानेर) में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् राजस्थान पुलिस उपनिरीक्षक 2014 में चयन हुआ, वर्तमान में आप राजस्थान पुलिस में उप निरीक्षक हैं, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

डॉ. मंगल यादव

डॉ. मंगल यादव का जन्म जयपुर जिला, राजस्थान में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया, इसी दौरान आप अनेक सरकारी सेवा में चयनित हुए। आपने राजस्थान की शिक्षक भर्ती के लिए शिक्षण विधियों की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक ''मंगल शिक्षण विधियाँ'' से लाखों विद्यार्थियों के सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

हमारी अन्य पुस्तकें

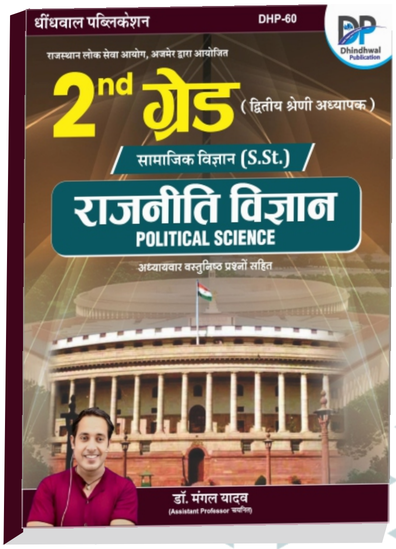

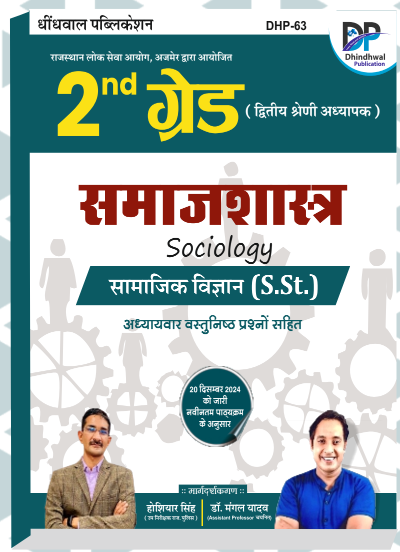

धींधवाल पब्लिकेशन
बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

प्रस्तुत करते हैं–

Dhindhwal Publication

2nd ग्रेड (द्वितीय श्रेणी अध्यापक)

दर्शनशास्त्र (Philosophy)

सामाजिक विज्ञान (S.St.)

(अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित)

- प्रामाणिक विषय–वस्तु का संकलन।
- परीक्षाओं के नवीन पैटर्न के अनुसार गहन व व्यापक पाठ्यसामग्री का संकलन।
- आरेख, मानचित्र, सारणियों सहित रोचक प्रस्तुतीकरण।
- पुस्तक की भाषा सरल एवं प्रत्येक अवधारणा को उदाहरण सहित समझाया गया है।

प्रकाशकः–
धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.– 8306733800

लेखकः– डॉ. मंगल
(असिस्टेंट प्रोफेसर चयनित)

प्रकाशक:-

धींधवाल पब्लिकेशन

B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर

मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication

- धींधवाल पब्लिकेशन

- Dhindhwal Classes

- @Publication-DP

- Dhindhwal Publication

बुक कोड- DHP- 62

© सर्वाधिकार- लेखक

फिक्स रेट- 70.00/-

मुद्रक-

पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इस पुस्तक के किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुन: उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णत: वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अत: ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अत: दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

2nd ग्रेड (द्वितीय श्रेणी अध्यापक)		
यूनिट	**विषय–वस्तु**	**पृष्ठ संख्या**
	RPSC 2nd ग्रेड परीक्षा (दर्शनशास्त्र) में पूछे गये प्रश्न	**1–10**
1.	**वेद और उपनिषद् की अवधारणा**	**11–30**
☞	दर्शनशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएँ, भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन में अंतर, दर्शनशास्त्र के क्षेत्र/अंग/शाखाएँ, दर्शनशास्त्र के कार्य व महत्त्व, भारतीय दर्शन के सम्प्रदाय, भारतीय दर्शन में कर्मवाद, भारतीय दर्शन में प्रमाण विज्ञान, वेद का अर्थ व परिभाषा, वेद का काल निर्णय, वेदों के प्रकार, ऋत्विज, वैदिक साहित्य, वैदिक धर्म का विकास, वैदिक ऋण, वैदों के प्रमुख देवता, उपनिषद् का अर्थ व परिभाषा, उपनिषदों का वर्गीकरण, उपनिषदों की संख्या, उपनिषदों की दार्शनिक विधियाँ, प्रमुख उपनिषद्, उपनिषद् की विषयवस्तु, उपनिषद् में आत्मा, आत्मा के पंचकोश, उपनिषद् में जगत, उपनिषद् में मोक्ष	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
2.	**धारणा व अवधारणाएँ (गीता का निष्काम कर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और गांधी दर्शन)**	**31–54**
☞	गीता का अर्थ, निष्काम कर्म विवेचना, नवधा भक्ति, गीता में योग, गीता में कर्मवाद, जैन नीतिशास्त्र की अवधारणाएँ, जैन त्रिरत्न, पंचमहाव्रत, सम्प्रदाय, जैन साहित्य, बौद्ध नीतिशास्त्र की अवधारणा, चार आर्य सत्य, बौद्ध त्रिचिरक, बौद्ध अष्टांगिक मार्ग, महापरिनिर्वाण, बौद्ध पंचमहाव्रत, बौद्ध सम्प्रदाय, गांधी की विशाल अवधारणाएँ, गांधी जी का पंचमहाव्रत, सत्याग्रह के प्रकार, न्याय धारिता, साधन और साध्य में संबंध, गांधी के राजनीतिक विचार, गांधी का अहिंसा पर विचार	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
3.	**सुकराती विधि व कार्स्टेशियन विधि**	**55–62**
☞	सुकरात विधि का अर्थ व परिभाषाएँ, सुकरात की पद्धति के आयाम, सुकरात का सामान्य परिचय, सुकरात के दार्शनिक विचार, सद्गुण संबंधी सुकरात के विचार कार्स्टेशियन विधि का अर्थ, देकार्त की गणितीय विधि के सूत्र, देकार्त दर्शन के भाग, देकार्त दर्शन के चार नियम, देकार्त पद्धति/विधि, देकार्त की अवधारणाएँ	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
4.	**सुखवाद, उपयोगितावाद, कांट का नीतिशास्त्र, संकल्प की स्वतंत्रता, दंड का सिद्धांत**	**63–75**
☞	सुखवाद का अर्थ व परिभाषाएँ, सुखवाद के प्रकार, उपयोगितावाद का अर्थ व प्रकार, जर्मी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल एवं सिजविक के विचार, कांट का नीतिशास्त्र, संकल्प की सवतंत्रता कांट के नैतिक नियम व मान्यता, दण्ड का सिद्धांत व प्रकार	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक मेरे **पिताजी श्री बाबू शिव लाल यादव** (Ex-Army Officer– वर्तमान पद प्रधानाध्यापक) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह पुस्तक उन सभी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, जो राजस्थान में RPSC 2nd ग्रेड अध्यापक भर्ती परीक्षा के (सामाजिक विज्ञान S.St.) के लिए 'दर्शनशास्त्र' विषय की तैयारी कर रहे हैं।

इस पुस्तक में मैंने निम्न तथ्यों को सम्मिलित किया है–

1. पुस्तक की भाषा सरल एवं प्रत्येक अवधारणा को उदाहरण सहित समझाया गया है।
2. यह पुस्तक मानक पुस्तकों को आधार मानकर तथा RBSE/UGC/RPSC की विगत परीक्षाओं के प्रश्नों का विश्लेषण करके तैयार की गई है, ताकि विद्यार्थी सभी प्रश्नों को समझ सके और सभी प्रश्नों का सही उत्तर दे सके।
3. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की पुस्तकों पर आधारित प्रामाणिक सामग्री का संकलन।
4. इस पुस्तक को इग्नु बोर्ड, विभिन्न ओपन विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों एवं विभिन्न संदर्भ पुस्तकों को आधार मानते हुए तैयार किया गया है।

इस पुस्तक के लेखन कार्य में मेरी बहन **डॉ. पूजा यादव**, **भाई विजय यादव**, **दिनेश कुमार** (I.A.S.), **डॉ. ममता** (Assistant Professor), **डॉ. रेखा चौधरी** (Assistant Professor), **महेन्द्र फौजी माण्डेला** (Indian Airforce) तथा **धींधवाल पब्लिकेशन टीम** का विशेष योगदान रहा है।

''अंधेरा, जब जिसको अखर गया, बस उसका जीवन फिर निखर गया......... डॉ. मंगल''

लेखकः– डॉ. मंगल
(असिस्टेंट प्रोफेसर चयनित)
मो.– 7976216970

RPSC 2nd ग्रेड परीक्षा (दर्शनशास्त्र) में पूछे गये प्रश्न

RPSC सेकंड ग्रेड (संस्कृत विभाग) भर्ती 2024

1. **उपनिषदों के अनुसार, जीवात्मा की निम्न चार अवस्थाएँ हैं**
(1) जाग्रत अवस्था, वैकृत अवस्था, स्वप्न अवस्था, तुरीयावस्था
(2) जाग्रत अवस्था, स्वप्न अवस्था, सुषुप्ति अवस्था, तुरीयावस्था
(3) वैकृत अवस्था, स्वप्न अवस्था, सुषुप्ति अवस्था, तुरीयावस्था
(4) भूतादि अवस्था, वैकृत अवस्था, स्वप्न अवस्था, सुषुप्ति अवस्था
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

2. **वेदों के बारे में निम्न में से कौनसा कथन असत्य है?**
(1) यजुर्वेद में कर्मकाण्ड संबंधी चर्चा है।
(2) वेद अपौरुषेय हैं।
(3) वेदों में केवल अलौकिक विषयों का ज्ञान भरा है।
(4) ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

3. **मोक्ष प्राप्ति के लिए समस्त सांसारिक सुखों का त्याग करके कठोर तपस्या व वैराग्यपूर्ण जीवन का उपदेश किस दर्शन में दिया गया है?**
(1) बौद्ध दर्शन (2) चार्वाक दर्शन
(3) जैन दर्शन (4) गाँधी दर्शन
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

4. **आत्मा, ईश्वर और जगत का सुनिश्चित और निर्विवाद ज्ञान प्राप्त करने के लिए देकार्ट की दार्शनिक विधि है–**
(1) द्वन्द्वात्मक (2) अन्तःप्रज्ञात्मक
(3) संशयात्मक (4) अनुभवातीत
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

5. **कान्ट के अनुसार, नैतिकता की आवश्यक मान्यताओं में निम्न में से कौनसी मान्यता सम्मिलित नहीं है?**
(1) आत्मा की अमरता (2) कर्म करने की क्षमता
(3) ईश्वर का अस्तित्व (4) संकल्प की स्वतन्त्रता
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

6. **सोक्रेटिक पद्धति को द्वन्द्वात्मक कहा जाता है क्योंकि–**
(1) यह तर्क और प्रति–तर्क की पद्धति है।
(2) यह एक शिक्षा की पद्धति है।
(3) यह एक आत्म–ज्ञान की पद्धति है।
(4) यह प्रश्न और उत्तर की पद्धति है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

7. **जैन दर्शन के अनुसार "मिथ्योपदेश" किस गुण या व्रत का उल्लंघन है?**
(1) सम्यग्दर्शन (2) अचौर्य (3) अहिंसा (4) सत्य
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

8. **आदर्शमूलक उपयोगितावाद की सही व्याख्या है–**
(1) इसमें स्वयं का सुख ही मनुष्य के कर्मों का एकमात्र आदर्श है।
(2) इसमें अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख ही आदर्श है।
(3) इसमें सुख के अतिरिक्त ज्ञान, सत्य, सद्गुण भी स्वतः साध्य शुभ है।
(4) इसमें दूसरों का सुख ही मनुष्य के कर्मों का एकमात्र आदर्श है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

9. **गाँधी के नीतिशास्त्र में अहिंसा, सत्य और ईश्वर के सन्दर्भ में साध्य–साधन के संबंध को बताने वाला निम्नलिखित में से सही विकल्प बताइये–**

	अहिंसा	सत्य	ईश्वर
(i)	साधन	साधन	साध्य
(ii)	साधन	साध्य	साध्य
(iii)	साध्य	साधन	साध्य
(iv)	साध्य	साध्य	साधन

(1) (i) (2) (ii)
(3) (iii) (4) (iv)
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

10. **निष्काम कर्म के अभ्यास का मुख्य परिणाम क्या है?**
(1) सामाजिक प्रतिष्ठा (2) स्वयं में सुधार
(3) सफलता (4) समत्व भाव
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

11. **बौद्ध नीतिशास्त्र के अनुसार 'सम्यक व्यायाम' का क्या तात्पर्य है?**
(1) न्यायपूर्ण जीविकोपार्जन
(2) सत्य मार्ग पर चलने का निश्चय
(3) चित्त की एकाग्रता
(4) शुभ की उत्पत्ति और अशुभ के निरोध हेतु प्रयत्न
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

12. **दण्ड का कौनसा सिद्धांत आत्म–नियन्त्रणवाद की अवधारणा पर आधारित है?**
(1) केवल प्रतिरोधात्मक सिद्धांत
(2) प्रतिकारात्मक सिद्धांत और प्रतिरोधात्मक सिद्धांत दोनों
(3) केवल सुधारवादी सिद्धांत
(4) केवल प्रतिकारात्मक सिद्धांत
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

1 वेद और उपनिषद् की अवधारणा

दर्शनशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएँ:

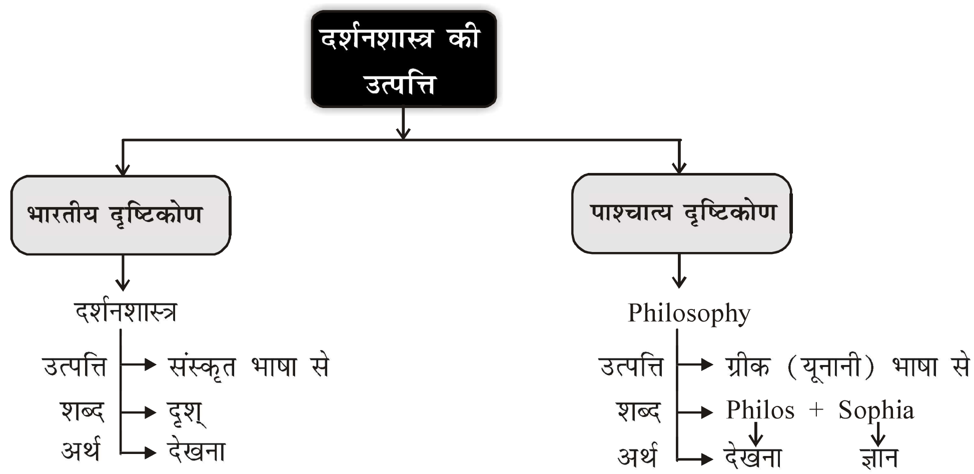

✦ **भारतीय दृष्टिकोण से दर्शन का अर्थ:**

➢ दर्शन शब्द **संस्कृत** के **'दृश'** धातु में **'ल्यूट'** प्रत्यय लगाकर बनाया गया है। जिसका अर्थ है- **'देखना'।**

➢ **'दर्शन'** पद की व्युत्पत्ति दो अर्थ है। पहले, **'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्।** इस व्युत्पत्ति के अनुसार संस्कृत में 'दर्शन' का अर्थ होता है- 'जिसके द्वारा देखा जाये।' **'दर्शन'** शब्द से वे सभी पद्धतियां अपेक्षित हैं, जिनके द्वारा परमार्थ का ज्ञान होता है। **'देखा जाये'** इस पद का अर्थ यों तो 'ज्ञान प्राप्त किया जाये' यह भी हो सकता है, फिर भी इस संबंध में यह ध्यान रखना उचित है कि ज्ञान प्राप्त करने के अनेक साधन हैं। जैसे-प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि।

✦ **पाश्चात्य दृष्टिकोण से दर्शन का अर्थ:**

➢ **अंग्रेजी** शब्द **Philosophy** है, जिसकी उत्पत्ति दो **यूनानी** शब्दों से हुई है:- **philo** जिसका अर्थ है **Love** और **Sophia** जिसका अर्थ है व of wisdom इस प्रकार philosophy का अर्थ है- **Love of Wisdom** (ज्ञान से प्रेम)।

(क) पाश्चात्य दार्शनिकों द्वारा दी गई परिभाषाएं:-

1. **अरस्तू** के अनुसार, 'दर्शन ऐसा विज्ञान है, जो चरम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जांच करता है।'
2. **प्लेटो** के अनुसार, 'पदार्थो के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान ही दर्शन है।'
3. **फिक्टे** के अनुसार, 'ज्ञान का विज्ञान ही दर्शन है।'
4. **कॉम्टे** के अनुसार, 'दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है।' -

(ख) भारतीय दार्शनिकों के द्वारा दी गई परिभाषाएं:

➢ **कौटिल्य** के अनुसार, 'आन्वीक्षिकी विद्या' ही दर्शन है।

➢ **अर्थशास्त्र, कौटिल्य के अनुसार**-
दर्शन 'प्रदीप: सर्व विद्यानानुपाय: सर्वकर्मणाम।
आश्रम: सर्वधर्माणम् शश्वदान्वीक्षिकीमता ।।'

➢ **डॉ. राधाकृष्ण के अनुसार**- 'यथार्थता के स्वरूप का तार्किक विवेचन ही दर्शन है।'

➢ **महात्मा गाँधी के अनुसार**- 'दर्शन एक प्रयोग है जिसमें मानव व्यक्तित्व एवं सत्य उसकी विषय वस्तु होती है और उसको जानने के लिए हम प्रमाण एकत्रित करते हैं।'

☞ **क्या आप जानते हैं?**

1. दर्शनशास्त्र के जनक एथेंस के सुकरात को माना जाता है। पश्चिम दर्शन में सुकरात, उसके शिष्य प्लेटो और प्लेटो के शिष्य अरस्तु को मुख्य स्तम्भ मन जाता है।
2. शंकराचार्य को भारतीय दर्शन का जनक कहा जाता है। वे अद्वैत वेदांत दर्शनशास्त्र के प्रमुख प्रतिपादक थे।
3. सांख्य को सबसे पुराना विश्व दर्शन माना जाता है। इसके विषय उपनिषदों से जुड़े हैं। इसने योग के लिए दार्शनिक आधार प्रदान किया और संभवत: बौद्ध धर्म के निर्माण को प्रभावित किया।

- ➢ डॉ० अविनाश चन्द्रदास ने भूगर्मशास्त्र और भूगोलगत साक्ष्यों के आधार पर ई० से 25000 वर्ष पूर्व माना जाता है।
- ➢ महर्षिदयानन्द सरस्वती ने सृष्टि के आरम्भ के साथ वेदों का भी आविर्भाव माना है।
- ➢ विण्टर नित्स ने वैदिक काल 2400 ई० से 500 ई० पू० तक माना है।
- ➢ डॉ० भण्डारकर ने वैदिक रचनाकाल 6000 ई० पू० माना है।
- ➢ अमलनरेकर ने ऋग्वेद का रचनाकाल 66000 से 75000 वर्ष पूर्व माना है।

वेदों के प्रकार

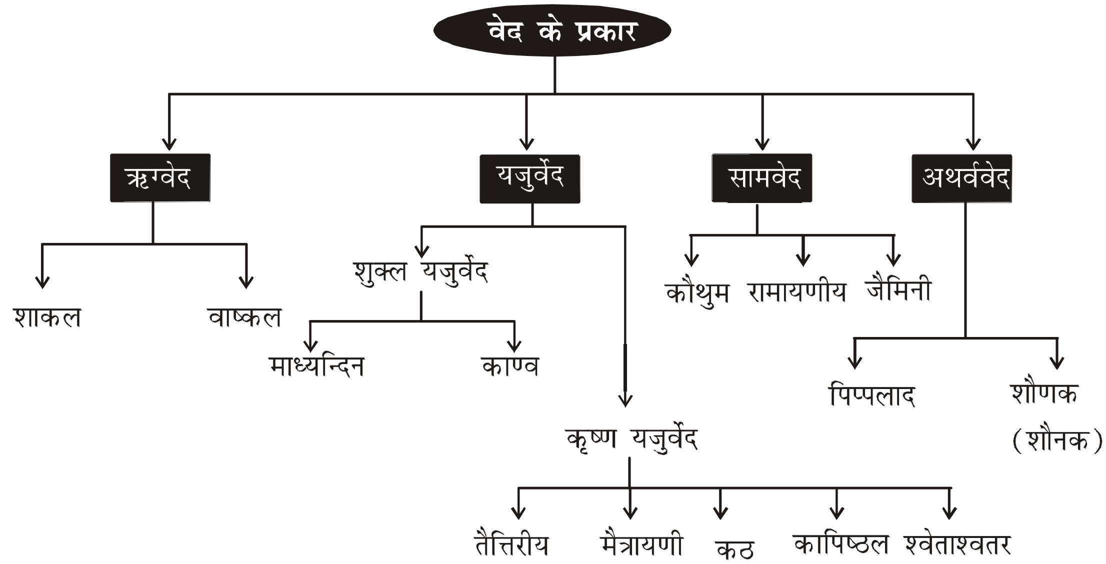

✦ वेदों के उपवेद—

क्र. सं.	वेद	उपवेद	रचनाकार
1.	ऋग्वेद	आयुर्वेद	प्रजापति/ब्रह्मा
2.	यजुर्वेद	धनुर्वेद	विश्वमित्र
3.	सामवेद	गंधर्ववेद	नारद
4.	अथर्ववेद	शिल्पवेद	विश्वकर्मा

I. ऋग्वेद

- ✧ ऋक् अर्थात् छंद व चरणों से युक्त।
- ✧ ऋग्वेद भारोपीय भाषाओं में लिखित प्राचीनतम ग्रंथ है इसलिए इसे मानव जाति का प्रथम ग्रंथ माना जाता है।
- ✧ इसे विज्ञानवेद भी कहा गया है।
- ✧ यह सबसे बड़ा व सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। जिसमें 10552 मंत्र, 1028 सूक्त तथा 10 मण्डल है।
- ✧ **दूसरे से लेकर सांतवें मण्डल तक प्राचीनतम रचना है जबकि पहला व दसवाँ मण्डल ऋग्वेद की नवीन रचना है।**
- ✧ ऋग्वेद में देवताओं की स्तुति का वर्णन मिलता है।
- ✧ ऋग्वेद के विभिन्न मण्डल व उनके **रचयिता** निम्न है—

क्र. सं.	मण्डल	प्रतिपादक
1.	प्रथम मण्डल	आंगीरस
2.	द्वितीय मण्डल	भार्गव
3.	तृतीय मण्डल	विश्वामित्र
4.	चतुर्थ मण्डल	वामदेव, अंगीरस
5.	पंचम मण्डल	अत्रि
6.	छठा मण्डल	भारद्वाज, अंगीरस
7.	सातवां मण्डल	वशिष्ठ
8.	आठवां मण्डल	कण्व ऋषि
9.	नवां मण्डल	अंगीरस
10.	दसवां मण्डल	नारायण

- ✧ प्रथम मण्डल विष्णु को समर्पित है।
- ✧ द्वितीय से सातवें मण्डल को वंश मण्डल कहा गया है। जो अग्नि की स्तुति से प्रारम्भ होते हैं।
- ✧ तृतीय मण्डल का दैवीय सूक्त सवितृ/सविता को समर्पित है।
- ✧ चतुर्थ मण्डल कृषि से संबंधित है।
- ✧ सातवां मण्डल सबसे प्राचीन माना जाता है। जिसमें दशराज्ञ युद्ध का वर्णन है।
- ✧ नवें मण्डल में प्रसिद्ध उक्ति ''मैं कवि मेरा पिता वैद्य व मेरी माता आटा पीसने वाली..........।'' वर्णित है।
- ✧ दसवें मण्डल के पुरुष सूक्त में वर्ण व्यवस्था का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है।

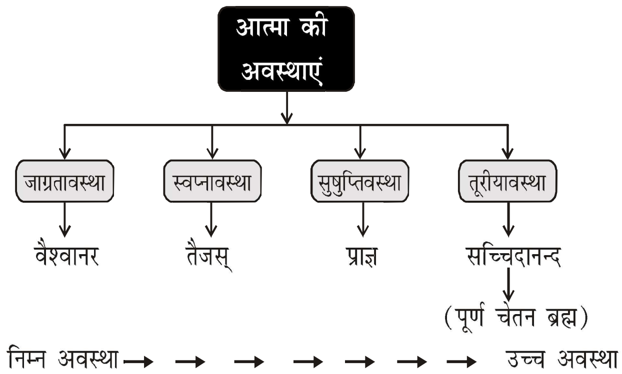

1. जाग्रतावस्थाः

- यह आत्मा की निम्नतम अवस्था है।
- इसे वैश्वानर भी कहते है।
- आत्मा की इस अवस्था में बाह्य भौतिक जीवन को ही आधार बनाया गया है।

2. स्वप्नावस्थाः

- आत्मा की यह अवस्था तेजस के नाम से जानी जाती है।
- उक्त अवस्था में बाह्य जगत के स्थान पर आन्तरिक जगत को, आन्तरिक चेतना अथवा आन्तरिक अनुभूतियों को जीवन का आधार बनाया जाता है। इसलिये यह अवस्था तेजस के नाम से जानी जाती है।

3. सुषुप्तिवस्थाः

- यह अवस्था प्राज्ञ कहलाती है।
- इस अवस्था में बाह्य तथा आन्तरिक जगत के स्थान पर बुद्धि तत्व को जीवन का आधार बनाया जाता है। इसलिये यह प्राज्ञ के नाम से जानी जाती है।
- आत्मा का केन्द्रिय बिन्दु शुद्ध चेतन्य, विज्ञान, तत्व की ओर अग्रसर हो जाता है।

4. तूरीयावस्थाः

- यह आत्मा की सर्वोच्च अवस्था है।
- इसमें आत्मा का शुद्ध चेतन रूप दिखाई देता है।
- शुद्ध चेतन्यमय, सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म, निर्गुण, निराकार, आत्मस्वरूप, जीवन का लक्ष्य स्वरूप प्राप्त हो जाता है।

आत्मा के पंचकोश

- आत्मा की चार अवस्थाओं के अतिरिक्त पांच कोश भी माने गये है जिसे पंचकोश कहा जाता है।
- इन कोशों की विशेषता है कि एक कोश स्वतः ही दूसरे कोश में चला जाता है।
- तैतरैय उपनिषद् में सर्वप्रथम पंचकोश की व्याख्या की गई है।

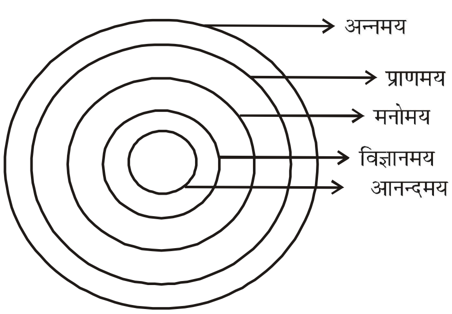

1. अन्नमय कोशः

- स्थूल शरीर से सम्बन्धित होने के कारण यह कोश अन्नमय कोश कहलाता है।
- इसमें व्यक्ति बाह्य भौतिक अन्न को ही जीवन का आधार मानता है।

2. प्राणमय कोशः

- उपनिषदों में प्राण वायु जीवन की शक्ति मानी गयी है।
- प्राण तत्व को जीवन का आधार बनाने वाला कोश प्राणमय कोश कहलाता है।

3. मनोमय कोशः

- मन एक आन्तरिक इन्द्रिय है।
- संकल्प, विकल्प, निर्णय यह सभी मन के कार्य माने गये है।
- मन को जीवन का आधार बनाने वाला कोश मनोमय कोश कहलाता है।

4. विज्ञानमय कोशः

- चेतना ही विज्ञान है जिसका सम्बन्ध बुद्धि से माना गया है तथा बुद्धि को जीवन का आधार माना गया है।

5. आनन्दमय कोशः

- इसका सम्बन्ध परमब्रह्म के सच्चिदानन्द रूप से है जिसमें परमसत्ता का शुद्ध चेतन रूप दिखाई देता है।

उपनिषद् में जगतः

- उपनिषद् के अनुसार एकम् सत्यम् ब्रह्म जगत मिथ्या अर्थात् एकमात्र सत्य ब्रह्म है और जगत के सभी तथ्य मिथ्या या झूठा ज्ञान प्रदान करते है।
- उपनिषद् त्रिविध सत्ता स्वीकार करते हैं-

1. प्रतिभासिक 2. व्यावहारिक 3. पारमार्थिक

1. प्रतिभासिक सत्ताः

- इसमें केवल कल्पना का ही अस्तित्व होता है, वस्तु का नहीं। जैसे- आकाश में फूल खिलना।

1. जीवन मुक्तिः

☯ संसार में रहते हुये भी मुक्त जीवन जीना जीवन मुक्ति कहलाता है। अर्थात् जगत में रहते हुये भी जगत से परे रहना।

2. विदेह मुक्तिः

☯ प्रारब्ध को भोग कर जन्म-मृत्यु के चक्र से हमेशा के लिये मुक्त हो जाना, विदेह मुक्ति कहलाता है।

अभ्यास प्रश्न

1. वेदों को 'श्रुति' भी कहा जाता है क्योंकि—
(1) इन्हें पढ़ा जाता है (2) इन्हें गाया जाता है
(3) ये सुन कर कण्ठस्थ किये जाते रहे हैं
(4) ये सुनने में मधुर लगते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

2. उपनिषदों को कहते हैं—
(1) ऐतिहासिक ग्रन्थ (2) धार्मिक ग्रन्थ
(3) वेदान्त (4) धर्मसूत्र।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

3. उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है—
(1) उत्तम ज्ञान (2) दार्शनिक विवेचन
(3) रहस्य ज्ञान के लिए गुरु के समीप बैठना
(4) वेदों का ज्ञान।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

4. वेदों में प्राचीनतम वेद है-
(1) ऋग्वेद (2) अर्थववेद
(3) सामवेद (4) युर्जेवेद
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

5. प्रस्थानत्रयी है-
(1) उपनिषद (2) वेद
(3) गीता (4) ब्रह्मसूत्र, गीता, उपनिषद
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

6. वेदों का वर्गीकरणकर्त्ता है-
(1) वेदव्यास (2) शंकर
(3) कपिल (4) रामानुज
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

7. वेद शब्द की व्युत्पत्ति है-
(1) विद् धातु से जानने के अर्थ में
(2) लिख् धातु से लिखने के अर्थ में
(3) सद् धातु से बैठने के अर्थ में
(4) पठ् धातु से पठने के अर्थ में
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

8. ऋत का संचालक देवता है-
(1) वरूण (2) मरूत
(3) अग्नि (4) इन्द्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

9. ऋत का सम्बन्ध है-
(1) नैतिक व्यवस्था से (2) भौतिक व्यवस्था से
(3) राजनैतिक व्यवस्था से (4) सामाजिक व्यवस्था से
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

10. वेदांग की संख्या है-
(1) छह (2) नौ
(3) सात (4) चार
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

11. उपनिषद् जिस भाषा में लिखे गए हैं, वह है-
(1) गद्य-पद्यात्मक् (2) पद्यात्मक्
(3) गद्यात्मक् (4) उपरोक्त में से कोई नहीं
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

12. उपनिषदों में निरूपित मुक्ति के प्रकार हैं-
(1) आठ (2) तीन
(3) चार (4) बीस
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

13. पुनर्जन्म का सिद्धान्त आधारित है-
(1) अध्यात्मकवाद के सिद्धान्त पर
(2) जड़वाद के सिद्धान्त पर
(3) कर्म के सिद्धान्त पर (4) श्रुत के सिद्धान्त पर
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

14. उपनिषद् के अर्थ हैं-
(1) ईश्वर भक्ति
(2) गुरू के निकट श्रद्धा सहित बैठना
(3) आत्म विद्या (4) रहस्यात्मक प्रवृति
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

15. उपनिषद् में वर्णित किस संवाद के द्वारा स्वीकार किया गया है कि आत्मा शरीर नहीं है-
(1) प्रजापति इन्द्र (2) यम नचिकेता
(3) इन्द्रमय संवाद (4) इन्द्र नचिकेता
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

16. 'वेद' शब्द का अर्थ है—
(1) ज्ञान (2) भक्ति
(3) शिक्षा (4) योग
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

17. वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रमाण चिन्ह ...... था—
(1) भक्ति (2) पूजा
(3) ध्यान (4) यज्ञ।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

18. ऋग्वैदिक काल में प्रयुक्त 'दम्पत्ति' शब्द द्योतक है—
(1) पति-पत्नी
(2) गृह स्वामिनी-स्वामी (गृहस्वामिनी-स्वामी)
(3) परिवार के मुखिया। (4) नव विवाहित युगल
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

19. ऋग्वैदिक आर्यों का सबसे प्रमुख देवता था—
(1) विष्णु (2) इन्द्र
(3) शिव (4) वरुण।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

20. वैदिक धर्म के विषय में कौनसा कथन बिल्कुल गलत है ?
(1) यह एक सेमेटिक धर्म है (2) यह बहुदेववादी है
(3) यह मूर्तिपूजक नहीं है
(4) यह एक देवता की सर्वोच्चता में विश्वास करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

2 धारणा व अवधारणाएँ

गीता का निष्काम कर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और गांधी दर्शन

- श्रीमद्भगवत्गीता भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। यह उपनिषदों का सार है। इसीलिए इसे **गीतोपनिषद् भी कहा जाता है।** यह भारतीय संस्कृति की आत्मा है। गीता के रचयिता महर्षि **वेदव्यास** हैं।
- भगवतगीता का पूरा नाम - **'श्रीमत् भगवत गीता'**
- गीता को पंचम वेद महाभारत के भीष्म पर्व से लिया गया है।
- इसमें **18 अध्याय** है तथा **700 श्लोक** माने गये है।
- इसके रचियता **वेद व्यास** है।
- गीता में **ज्ञान, कर्म** तथा **भक्ति** तीनों की त्रिवेणी है।
- गीता में योग शब्द से तात्पर्य युज् धातु से उत्पन्न योग जोड़ने के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

> ☞ **क्या आप जानते हैं?**
> - महाभारत के भीष्म-पर्व के 25वें से 42वें अध्याय तक का भाग है। यह मूलत: संस्कृत में है और इसमें 18 अध्याय हैं। इसमें कुल 700 श्लोक हैं।

- गीता के **अनुसार योग** का अर्थ है- **जीवात्मा का परमात्मा** से मिलन। यहाँ इसके साधन के रूप में ज्ञान, कर्म और भक्ति को स्वीकार किया गया है।
- लोक-संग्रह क्या है- गीता के अनुसार लोक संग्रह का आशय है- सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करना। व्यावहारिक नैतिकता के स्तर पर लोकसंग्रह अर्थात् सामाजिक कल्याण को परम पुरुषार्थ माना गया है। यही भगवत्गीता का सर्वोच्च सामाजिक आदर्श है। यही मुक्ति का द्वार है।
- नीति के आध्यात्मिक आधार पर मानव के कर्तव्य का क्रमानुसार निर्णय 1- स्वभाव → स्वधर्म → स्वकर्म।
- स्वधर्म एवं स्वभाव में सहज संबंध है। जो आध्यात्मिक दृष्टि से स्वधर्म है वहीं व्यावहारिक दृष्टि या सामाजिक दृष्टि से 'स्वकर्म' हो जाता है।

> ☞ **क्या आप जानते है?**
> - गीता के प्रमुख भाष्यकार या व्याख्याकार-
> - प्राचीन काल में: शंकर, रामानुज, मध्वाचार्य
> - आधुनिक काल में: गाँधी, तिलक, श्रीमती एनी बेसेन्ट, विनोबा भावे, श्री अरविन्द
> - राजनययिक: राधाकृष्णनन
>
> क्रांतिकारी: बाल गंगाधर तिलक (कर्मयोग की प्रधानता)

निष्काम कर्म

- गीता का केन्द्रीय भाव = निष्काम कर्म योग
- **निष्काम कर्म योग का अर्थ**- 'बिना फल की इच्छा रखे हुए काम करना है।' गीता का निष्काम कर्मयोग हिन्दू विचारधारा का सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। गीता के एक श्लोक से निष्काम कर्म योग को समझा जा सकता है। 'कर्मण्य वाधिककास्तु मा फलेषु कदाचन' जिसका अर्थ है 'व्यक्ति का अधिकार केवल कर्म को करने तक है, उसके फल अथवा परिणाम तक नहीं।'

  गीता के निष्काम कर्म के निम्न दो अर्थ हैं-

(i) **आत्मशुद्धि**-इसके अनुसार निष्काम कर्मयोगी उस समूह के लिए कार्य करता है, जिसका वह सदस्य होता है। अर्थात् कर्तव्य के लिए किया जाने वाला कर्म आत्मशुद्धि कहलाता है।

(ii) ईश्वर के प्रयोजन को पूरा करना इसके अनुसार निष्काम कर्मयोगी द्वारा कर्म ईश्वर के लिए किया जाता है और उसका फल ईश्वर को समर्पित कर दिया जाता है। यह कर्तव्य ईश्वर के लिए किया जाता है।

- इस प्रकार फलासक्ति को छोड़कर केवल अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए कर्म करना ही निष्काम कर्मयोग है। निष्काम कर्मयोग में प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग, इन दोनों विरोधी विचारधाराओं का समन्वय करने का प्रयत्न किया गया है, क्योंकि इसमें मनुष्य को स्वधर्म पालन के लिए सभी आवश्यक कर्म करते हुए उनसे प्राप्त होने वाले फल की इच्छा का त्याग करने का आदेश दिया गया है। गीता के अनुसार निष्काम कर्मयोगी को 'स्वधर्म' का पालन करना चाहिए। गीता में 'वर्णधर्म' को ही 'स्वधर्म' कहा गया है। गीता में प्रत्येक वर्ण के स्वाभाविक कर्तव्य के लिए 'स्वधर्म' शब्द का प्रयोग किया गया है।

> ☞ **क्या आप जानते हैं?**
> - गीता के द्वितीय अध्याय के 47वें व 48वें श्लोक में निष्काम कर्ममार्ग के बारे में बताया गया है। इसी अध्याय में 55वें, 56वें व 57वें श्लोक में स्थित प्रज्ञ व्यक्ति की प्रमुख विशेषताएँ बताई गई हैं।
> - निष्काम कर्म को कर्मयोग भी कहते हैं। निष्काम कर्म प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच, सुखवाद एवं वैराग्यवाद के मध्य सुन्दर सामंजस्य स्थापित करता है। प्रवृत्ति का आदर्श कर्म का आदर्श है, सुख का आदर्श है। निवृत्ति का आदर्श वैराग्य का आदर्श है जो सभी कर्मों के परित्याग एवं सांसारिक संबंधों से विमुख होने का समर्थक है। गीता के अनुसार कर्म करना मनुष्य का अधिकार भी है और कर्त्तव्य भी। कर्म का फल मनुष्य के अधिकार में नहीं है।

- ☯ इसका शाब्दिक अर्थ है – बुझ जाना
- ☯ बुझना यहां जीवन का अन्त नही है अपितु दुखों का अन्त है।
- ☯ दुखों का पूर्ण रूप से विनाश हो जाना निर्वाण कहलाता है।
- ☯ निर्वाण की प्राप्ति इसी जीवन में रहते हुये संभव मानी जा सकती है।
- ☯ निर्वाण सक्रियता की अवस्था है। इसका साक्षात प्रमाण स्वयं गौतम बुद्ध का जीवन है।
- ☯ निर्वाण प्राप्ति के पश्चात गौतम बुद्ध जनकल्याण के लिये अधिक सक्रिय हुये।
- ☯ निर्वाण स्वतः अनुभूति का विषय है। शब्दों के माध्यम से इसे वर्णित नहीं किया जा सकता।
- ☯ निर्वाण प्राप्ति के लाभः 1. दुखों का पूर्ण रूप से विनाश 2. पुनर्जन्म का अन्त 3. जीवन के प्रति असीम आनन्द की प्राप्ति (शांति)

बौद्ध त्रिपिटक

- **त्रिपिटक—** पिटक का शाब्दिक अर्थ होता है 'पेटी'। बौद्ध दर्शन के नियमो और उपदेशों का संकलन तीन भागों में है, जिन्हें संयुक्त रूप से त्रिपिटक कहते है।

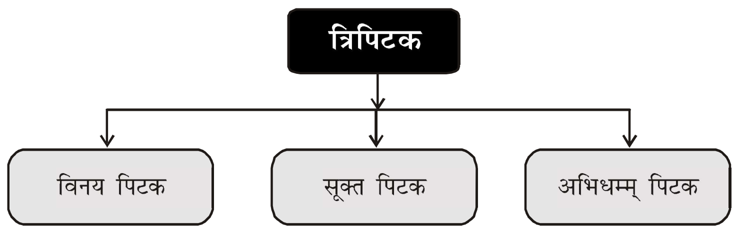

1. विनयपिटक— बौद्ध दर्शन और संघ के नियमों का संकलन।
2. सूक्तपिटक— बुद्ध के उपदेशों और विभिन्न वार्तालापों का संकलन।
3. अभिधम्मपिटक— बौद्ध दर्शन के गम्भीर दार्शनिक सिद्धान्तों का वर्णन।

अष्टांगिक मार्ग

- बौद्ध दर्शन में मोक्ष की प्राप्ति के साधन के रूप में आठ प्रकार के उपायों का उल्लेख मिलता है जिन्हे कि संयुक्त रूप से **अष्टांगिक मार्ग** कहते है।
- यह अष्टांगिक मार्ग ही **मध्यम प्रतिपदा** कहलाता है क्योंकि यह समस्त प्रकार की अतियों का निषेध कहलाता है।

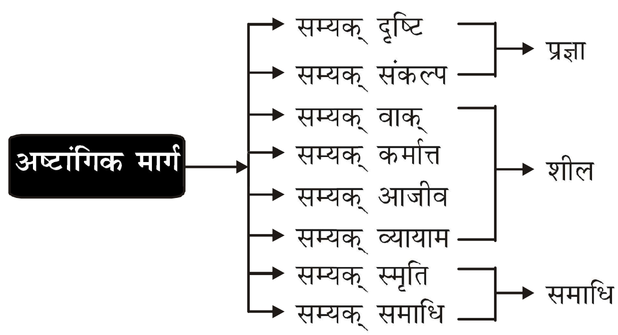

1. **सम्यक् दृष्टि—**

- वस्तुओं को उनके यथार्थ रूप में जानना और चार आर्य सत्यों का चिन्तन सम्यक दृष्टि कहलाता है।
- **अभिधम पिटक** के विभंग ग्रन्थ में चार आर्य सत्यों के ज्ञान को ही सम्यक् दृष्टि कहा गया है।

2. **सम्यक् संकल्प—**

- सम्यक् दृष्टि से जाने गये विचारों के अनुसार कार्य करने का दृढ़ संकल्प करना। सम्यक संकल्प का अर्थ है मन, वचन और कर्म से संसार त्याग और द्रोह, घृणा, द्वेष आदि एवं हिंसा से विरत हो जाना।

3. **सम्यक् वाक—** यथार्थ और सत्य वचन बोलना जो कि हितकर भी हो उसे ही सम्यक वाक् कहा जाता है। झूठ, चुगली, कठोर वाणी, व्यर्थ की बकवास आदि से व्यक्ति को बचाना ही सम्यक वाक् का उद्देश्य है।
4. **सम्यक् कर्मान्त—** हितकर कार्यो का आचरण ही सम्यक कर्मान्त है। उन सभी कर्मो का परित्याग करना चाहिए जो बुरे असत्य है जैसे हिंसा, चोरी, लोभ, कामुकता, आराम, ऐश्वर्य भोग, मिथ्याचार आदि।
5. **सम्यक् आजीव—** अपनी जीविका चलाने के लिये नैतिकता से युक्त व्यवसाय को अपनाना सम्यक आजीव है। इसका अर्थ होता है शुद्ध और उचित उपायों से जीविकोपार्जन करना।
6. **सम्यक् व्यायाम—** जो अच्छे विचार ह्रदय में प्रविष्ट हो गये है, उनका अस्तित्व बचाये रखना और बुरे विचारों का ह्रदय में प्रवेश रोकना ही सम्यक व्यायाम है।

3 सुकराती विधि व कार्स्टेशियन विधि

सुकरात विधि

- सुकरात का उद्देश्य किसी दार्शनिक सिद्धान्त की स्थापना करना नहीं था। सुकरात की विचारधारा लोगों में केवल आत्मज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा जागृत करना चाहते है।
- सुकरात का सद्गुण में अटल विश्वास था। सद्गुण के बिना सुकरात किसी जगत की कल्पना नहीं कर सकते है।
- सद्गुण है, तो उसका ज्ञान भी अनिवार्य रूप से होना चाहिए। क्योंकि ज्ञान के बिना 'सद्गुणों' के अस्तित्व का निश्चित ज्ञान कभी नहीं हो सकता।
- बाद में सुकरात ने सद्गुण और ज्ञान में तादात्म्य को स्वीकार करते हुए 'सद्गुण ही ज्ञान है' और 'ज्ञान ही सद्गुण है' की घोषणा करते हैं।

☞ **क्या आप जानते हैं?**
- सुकरात का सम्बन्ध ग्रीक/यूनान से माना गया है।
- सुकरात के दर्शन का मूल उद्देश्य सत्य की खोज माना गया है।
- सुकरात अपने दर्शन के माध्यम से सार्वभौमिक, निरपेक्ष, बौद्धिक, वस्तुनिष्ठ ज्ञान की प्राप्ति चाहते थे।

- इनके अनुसार ज्ञान मत नहीं है।
- नैतिक शिक्षा से संबंधित पद्धति को सुकराती पद्धति कहा जाता है। सुकराती पद्धति व्यक्तियों के बीच सहकारी तर्कपूर्ण संवाद का एक रूप है, जो महत्त्वपूर्ण सोच के प्रोत्साहित करने और विचारों व अन्तर्निहित पूर्ण धारणाओं का निकालने के लिए प्रश्न और उत्तर देने पर आधारित है।

☞ **क्या आप जानते हैं?**
- सुकराती पद्धति को प्रश्नोत्तर विधि के रूप में जाना जाता है जिसका एक शिक्षात्मक महत्त्व है।
- सुकराती पद्धति परिकल्पना उन्मूलन की एक विधि है, जिसमें बेहतर परिकल्पनाओं को लगातार पहचानने और उन लोगों की विचारधारा को समाप्त करने से पाया जाता है, जो विरोधाभास को जन्म देती हैं।
- सुकराती पद्धति सामान्य, सामान्य रूप से धारित सत्यों की खोज करती है, जो विश्वासों को आकार देते हैं और अन्य विश्वासों के साथ उनकी संगति को निर्धारित करने के लिए उनकी छानबीन करते है।

- सुकराती पद्धति अर्थात् सुकरात की दार्शनिक पद्धति, वार्तालाप की पद्धति कहलाती है।
- इसे **'प्रसाविका'** अथवा **'धात्री विधि'** भी कहते हैं। प्रसाविका अर्थात् जिसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न होता है। धात्रि अर्थात् धारण करने वाली।
- सुकराती पद्धति प्रत्यात्मक अथवा परिभाषा आत्मक है। इस पद्धति की मुख्य विशेषता हमारे प्रतिदिन के अनुभव से है।
- सुकरात की पद्धति को बौद्धिक प्रसाविका/धात्री विधि कहा जाता है। क्योंकि निरपेक्ष तथा सार्वभौमिक व बौद्धिक ज्ञान का प्रारम्भ सुकरात के दर्शन से ही माना गया है।

सुकरात की पद्धति के आयाम

सुकरात पद्धति/विधि →
- संदेहात्मक पद्धति
- वार्तालाप (विवादात्मक) पद्धति
- द्वन्द्वात्मक (प्रत्यायात्मक) पद्धति
- आगमनात्मक (अनुभवात्मक) पद्धति
- निगमनात्मक पद्धति
- धारणात्मक पद्धति

1. संदेह/संशय की पद्धतिः
- सुकरात प्रत्येक समस्या पर संदेह करते थे क्योंकि उनके दर्शन का उद्देश्य सत्य की खोज था। सुकरात ने संदेह को केवल एक साधन के रूप में स्वीकार किया जिसके द्वारा नित्य ज्ञान तथा सार्वभौमिक ज्ञान की सुकरात ने स्थापना की।
- संदेह आदि तो है परन्तु अन्त नहीं।
- संदेह साधन तो है परन्तु साध्य नहीं।

2. वार्तालाप/वादविवादात्मक पद्धतिः
- सुकरात वाद-विवाद के अत्यधिक समर्थक थे, किन्तु यह वाद-विवाद व्यर्थ का वाद-विवाद नहीं बल्कि इसके द्वारा तत्त्व ज्ञान प्राप्ति तक पहुँचना है।
- प्रश्नोत्तर पद्धति शिक्षात्मक महत्व रखती है। इस पद्धति के अनुसार सुकरात के समक्ष कोई प्रश्न रखा जाता तो सुकरात प्रश्नकर्त्ता से ही उसका हल ढूढने को कहते है।
- प्रश्नकर्त्ता के उत्तर का सुकरात उसकी अलोचना करते और तत्पश्चात प्रश्नकर्त्ता दूसरा समाधान देता। सुकरात पुनः उसकी आलोचना करते है।
- सुकरात की यह **पद्धति धात्री-प्रणाली** कहलाती है। जिस प्रकार किसी धात्री (दाई) का कार्य बच्चे को जन्म देने में मदद करना भर है, न कि बच्चे को माँ की गर्भ में रखना।
- इसी तरह शिक्षा का कार्य किसी बाहरी ज्ञान का व्यक्तिकी बुद्धि में स्थापित न कर के, आत्मा में पूर्व में विद्यमान ज्ञान को स्पष्ठ और विकसित और प्रस्फुटित करना है। इसलिये इस पद्धति के **'बौद्धिक प्रसाविका'** (Intelleclual Midwiyery) कहते है।

4 सुखवाद, उपयोगितावाद, कांट का नीतिशास्त्र, संकल्प की स्वतंत्रता, दंड का सिद्धांत

सुखवाद

✦ **सुखवाद क्या है?**

➢ सुखवाद एक नैतिक सिद्धांत है जिसमें किसी भी कर्म अथवा नियम को अपनाने के परिणामस्वरूप व्यक्ति को सुख की प्राप्ति होती है। उसे ही **सुखवाद** कहा जाता है।

➢ नीतिशास्त्र में स्वार्थवाद और सुखवाद दो भिन्न सिद्धान्त है। स्वार्थवादी सुख के साथ-साथ ज्ञान, चरित्र, आत्मोन्नति को भी महत्त्व देते हैं, परन्तु सुखवादी केवल सुख को ही मानव जीवन का परमध्येय और सुख की इच्छा को मनुष्य के सभी कर्मो का एक मात्र प्रेरणा मानता है।

➢ सुखवाद के **जन्मदाता** यूनान के **अरिस्टिपस** थे। वे सिरेने के निवासी थे। इसीलिए जिस संप्रदाय की उन्होंने स्थापना की, उसे सिरेनाइक (Cyrenaics) मत कहा जाता है। यही मत सुखवाद का पहला संस्करण है।

✦ **सुख की परिभाषाएं-**

➢ **एपीक्यूरस** के अनुसार, 'दु:ख का अभाव ही सुख है।' अपने इस मत को प्रकट करते हुए उन्होनें लिखा है कि 'शारीरिक पीड़ा और मानसिक कष्ट का अभाव ही सुख है।'

☞ **क्या आप जानते हैं?**

➢ **एपीक्यूरिस** द्वारा की गई सुख की परिभाषा अशंत: सत्य होते हुए भी एकांगी एवं अपूर्ण है। इसी कारण इस परिभाषा को अस्वीकार करते हुए सिजपिक ने सुख की एक भिन्न परिभाषा दी है।

➢ **जे एस मिल** के अनुसार, 'सुख और आनंद दोनों पर्यायवाची शब्द है।'

➢ **हेनरी सिजविक** के अनुसार सिजविक 'सुख' का वांछनीय अनुभूति मानते हैं। इसी आधार पर उन्होनें अपनी पुस्तक 'दि मेथड्स ऑफ एथिक्स' में सुख की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि 'सुख वह भावना है जिसे बुद्धिशील प्राणी अनुभव करने पर कम से कम निहित रूप से वाँछनीय समझते हैं और अन्य भावनाओं की तुलना में वरीय मानते हैं।' (सिजविक द्वारा दी गई सुख की परिभाषा भी पूर्णतया सन्तोषप्रद नहीं है।)

➢ 'आनन्द', 'सुख' की अपेक्षा कम तीव्र किन्तु अधिक स्थायी होता है। सुख का संबंध इच्छाओं की सन्तुष्टि से है, परन्तु आनन्द का संबंध व्यक्ति के समग्र रूप से सन्तुष्ट होने से है।

➢ नीतिशास्त्र में कुछ सुखवादी 'सुख' और 'आनन्द' में भेद नहीं करते है। ये सुखवादी 'सुख' शब्द को व्यापक अर्थ में ग्रहण करते हुए आनन्द को भी उसी के अन्तर्गत माना है।

☞ **क्या आप जानते हैं?**

➢ **जॉन स्टुअर्ट** मिल सुख और आनन्द में कोई अन्तर नहीं मानते और 'सुख' को व्यापक अर्थ में लेते हुए आनन्द को भी उसी में सम्मिलित करते है। मिल ने स्पष्ट कहा है कि 'आनन्द' का अर्थ 'सुख' का होना तथा 'दु:ख' का न होना है।

सुखवाद के प्रकार

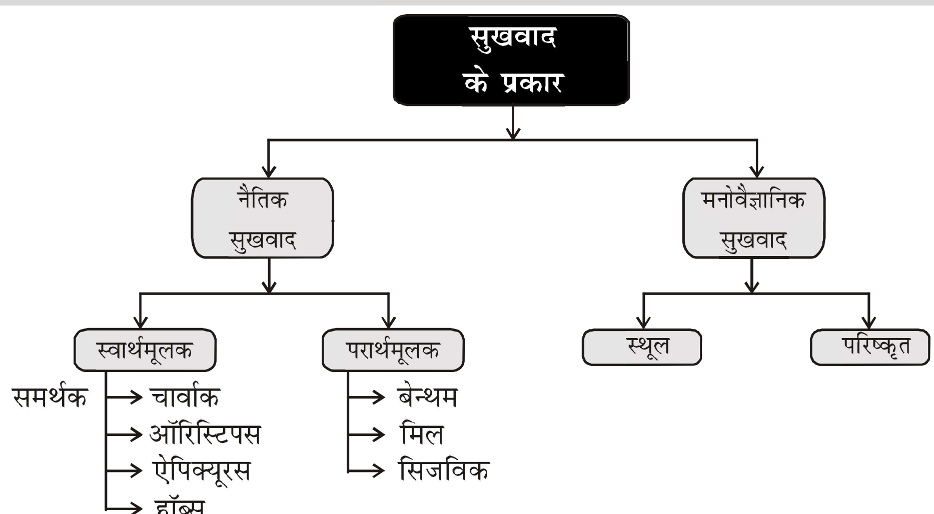

✦ **नैतिक सुखवाद** -

➢ नैतिक सुखवाद मनुष्य के कर्तव्य का निर्धारण करने के लिए 'सुख' को एकमात्र अनिवार्य मापदण्ड मानता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य के सुख में सहायक प्रत्यके कर्म 'शुभ' तथा उसके सुख में बाधक प्रत्येक कर्म 'अशुभ' है।

➢ नैतिक सुखवाद के समर्थकों का मत है कि 'सुख' ही अपने आप में शुभ तथा वाँछनीय है और दु:ख ही अपने आप में अशुभ तथा अवांछनीय है।